ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

22-12-2024

सन्तुष्टता अर्थात् दिल-दिमाग सदा आराम में हो। सुख-चैन की स्थिति में हो। सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुआयें दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुआ मांगेगा नहीं, लेकिन दुआयें स्वयं उसके आगे स्वतः ही आयेंगी। ऐसे सन्तुष्ट मणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वी बनो।

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

Contentment means that your heart and head are always at rest. They are always in a state of happiness and comfort. Contentment enables you to receive blessings from the Father and others. A contented soul will from time to time experience the self to be flying in the vehicle of blessings from the Father and everyone else. Such a soul will not ask for blessings, but blessings will automatically appear for that one. Become such a jewel of contentment, that is, become a tapaswi, an embodiment of success.